२९ कृष्णाजिनम्

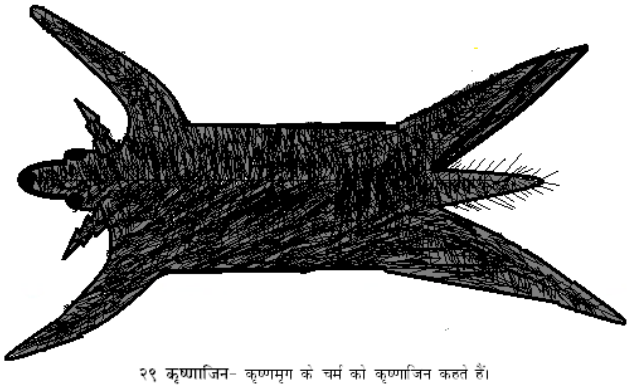

२९ **कृष्णाजिन**- कृष्णमृग के चर्म को कृष्णाजिन कहते हैं। धान कूटने के समय उलूखल के नीचे और अग्निमन्थन के समय अरणी के नीचे इसे बिछाते हैं।

''कृष्णाजिनमादत्ते। श.प.ब्रा.- 1/1/1/4

३० दृषद्

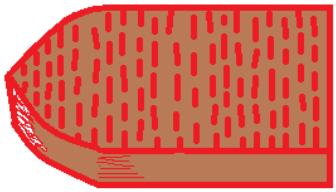

३० **दृषत्**- दीर्यते असौ दृषत्। पुरोडाश बनाने के लिए यव या व्रीहि का पेषण संस्कार इस पर होता है। यह एक शिला है। यह एक रत्नि लम्बी और चौड़ी चतुरस्र होती है। दृषद्रत्निप्रमाणेन । यज्ञपार्श्व परि- श्लोक 24

३१ उपला

३१ **उपला**- पुरोडाश बनाने के लिए यव या व्रीहि को पीसने की लोढ़िया को उपल कहते हैं। ''तथोपला0 । यज्ञपार्श्व परि- श्लोक 124

३२ श्रुतावदानम्

३२ **श्रुतावदान**- यह प्रादेशमात्र का एक यज्ञपात्र है। पुरोडाश में से अवदान लेने के निमित्त इसका उपयोग होता है। इसका आकार खुरपी जैसा कहा गया है।

''प्रादेशमात्रं तीक्ष्णाङ्गुष्ठपर्वमात्रपृथुमुखम्'' दे.या.प.- पृष्ठ 7

३३ आज्यस्थाली

३३ **आज्यस्थाली**- देवता के निमित्त हवन अथवा याग करने का आज्य जिस पात्र में रखते हैं, उसे आज्यस्थाली कहते हैं।

आज्यस्थाली च कर्तव्या तैजसद्रव्यसम्भवा।
माहेयी वापि कर्तव्या सर्वास्वाज्याहुतीषु च ।।

कात्यायनस्मृति- 15/10

३४ अन्तर्धानकटः

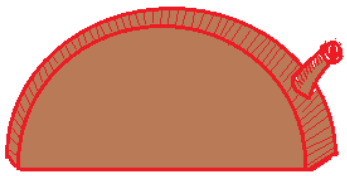

३४ **अन्तर्धानकटः**- यह बारह अँगुल लम्बा, छः अँगुल चौड़ा और अर्धचन्द्राकार एक यज्ञपात्र है। जिस समय अध्वर्यु गार्हपत्य के अग्नि पर पत्नीसंयाज करता है, उस समय देवपत्नियों का आवाहन होता है। लज्जा स्त्रियों का सहज धर्म है। साथ ही स्त्रियाँ पुरुष के सम्मुख भोजन करना पसन्द नहीं करतीं। सम्भवतः इसीलिए इस पात्र को बीच में रखकर उपर्युक्त कार्य का निर्वाह किया जाता है।

अन्तर्धानकटस्त्वर्धचन्द्राकारो द्वादशाङ्गुलः । दे.या.प.-पृष्ठ 7